कक्षा-१०
विषय - हिंदी
पाठ - भेड़ें और भेड़िए

लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई हिंदी के प्रसिद्ध लेखक और व्यंग्यकार थे।

- उनका जन्म होशंगाबाद, मध्य प्रदेश में हुआ था।
- उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के आमने-सामने खड़ा करती है, जिनसे किसी भी संवेदनशील व्यक्ति का अलग रह पाना लगभग असंभव है।
- लगातार खोखली होती जा रही हमारी सामाजिक और राजनैतिक व्यवस्था में पिसते मध्यमवर्गीय मन की सच्चाइयों को उन्होंने बहुत ही निकटता से पकड़ा है।
- परसाई जी की भाषा अत्यंत सहज होते हुए भी बात को तीखे अंदाज़ में कहने में समर्थ है।

कठिन शब्दार्थ

सहस्रों - हज़ारों

अवरुद्ध - रुका हुआ

क्षुद्र - छोटा

प्रतिनिधि - नुमाइंदा

सर्वशक्तिमान - सब शक्तियों से युक्त

मुखारविंद - सुंदर मुख

कोरस - समूह गान

सर्वत्र - सब जगह

बंधुत्व - भाईचारा

अंत्येष्टि क्रिया - मृतक का अंतिम कर्म

भावातिरेक - भावों की अधिकता

अजायबघर - म्यूज़ियम, संग्रहालय

अर्पित करना - भेंट करना

फ़ीसदी - प्रतिशत

विचारक - चिन्तक

धर्मगुरु - धर्म की शिक्षा देने वाला

कहानी और प्रतीक

भेड़ें

भेड़ें भोली-भाली जनता कi प्रतीक हैं जो अपने भविष्य को सँवारने के लिए तथा भय-मुक्त समाज का निर्माण करने के लिए अपने जन-प्रतिनिधियों को चुनने का निर्णय लेते हैं। वे एक क्रांतिकारी परिवर्तन चाहते हैं जिससे पूरे समाज में खुशी की लहर दौड़ पड़े और उनके सारे भय दूर हो जाएँ तथा शांति, बंधुत्व और सहयोग पर आधारित समाज की स्थापना हो सके।

भेड़िए - सत्ताधारी भ्रष्ट शोषक वर्ग के प्रतीक हैं। शोषक वर्ग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए मिथ्या प्रचार कर

सत्ता में आता है और अपने स्वार्थ की पूर्ति करता है। यह वर्ग भ्रष्ट और बेईमान हो जाता है तब वह सिर्फ़

अपने हितों की रक्षा करता है एवं जन-कल्याण की भावना से विमुख हो जाता है।

सियार

सियार समाज के स्वार्थी और अवसरवादी भ्रष्ट चापलूस लोगों के प्रतीक हैं। ऐसे लोग शोषक वर्ग की दया पर

पलते हैं और उनके हर अनैतिक और गलत कार्यों में उनका साथ देते हैं। बूढ़ा सियार भी भेड़िये द्वारा फेंकी

गई हड्डियों को चूस-चूसकर खाता था। इन लोगों की स्वार्थपरता इन्हें मानवता-विरोधी बना देती है। अपने

स्वार्थों की पूर्ति के लिए ही सियारों ने चुनाव में भेड़िये का प्रचार किया था।

कहानी : एक नज़र

- पशु समाज की खुशी का कारण यह था कि वन-प्रदेश में सभ्यता के विकास के उपरांत एक अच्छी शासन-व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रजातांत्रिक सरकार के लिए चुनाव की आवश्यकता महसूस की गई।
- पशु-समाज ने अपने भविष्य को सँवारने के लिए तथा भय-मुक्त समाज का निर्माण करने के लिए वन-प्रदेश में अपने जन-प्रतिनिधियों को चुनने का निर्णय लिया। यह एक क्रांतिकारी परिवर्तन था जिससे पूरे वन-प्रदेश में खुशी की लहर चल पड़ी। भेड़ों ने सोचा कि अब उनका भय दूर हो जाएगा तथा शांति, बंधुत्व और सहयोग पर आधारित समाज की स्थापना हो पाएगी।

- चुनाव की घोषणा होते ही भेड़ियों ने यह सोचा कि अब उनका संकटकाल आ गया है। वन-प्रदेश में भेड़ों की संख्या बहुत ज्यादा है इसलिए चुनाव के बाद पंचायत में उनका ही बहुमत होगा और वे अपने हितों की सुरक्षा के लिए कानून बनवाएँगे कि कोई पशु किसी को न मारे। ऐसी स्थिति में भेड़ियों को घास चरना सीखना पड़ेगा।
- चुनाव के समय भेड़ियों का प्रचार सियारों ने किया। बूढ़े सियार और तीन रंगे सियारों ने भेड़िये को संत बताकर उसकी झूठी प्रशंसा की थी और उनके पक्ष में जनमत तैयार किया था। पीले सियार ने कवि और लेखक की, नीले सियार ने पत्रकार की और हरे सियार ने धर्मगुरु की भूमिकाएँ निभाई थीं।
- भेड़ों को यह विश्वास हो गया था कि भेड़िया अब संत बन गया है। वह शाकाहारी बन चुका है। उसका हृदय-परिवर्तन हो गया है। यदि भेड़िया चुनाव में जीता तो वह भेड़ों के हितों की रक्षा के लिए कार्य करेगा और उनके विजयी होने पर भेड़ निर्भय होकर जीवन बिता सकेंगी।
- भेड़ें अत्यंत ही नेक, ईमानदार, कोमल, विनयी, दयालु और निर्दोष थीं और वे भ्रष्ट सियारों की बातों में आकर भेड़ियों को अपना शुभचिन्तक तथा हितरक्षक मानने लगी थीं और उन्होंने भेड़िए को अपना मत देकर चुनाव में विजयी बनाया।
- चुनाव में जीतने के बाद पंचायत में भेड़िये प्रतिनिधि बनकर आए और उन्होंने भेड़ों के हितों की भलाई के लिए पहला कानून यह बनाया कि हर भेड़िये को सवेरे नाश्ते के लिए भेड़ का एक मुलायम बच्चा, दोपहर के भोजन में एक पूरी भेड़ और शाम को स्वास्थ्य के ख्याल से आधी भेड़ दी जाए।

कहानी का उद्देश्य

भेड़ें और भेड़िए श्री हरिशंकर परसाई जी द्वारा लिखी गयी प्रसिद्ध कहानी है . इन्होने व्यंगात्मक शैली में वर्तमान लोकतांत्रिक व्यव्स्था का उपहास किया है.कहानी के आरम्भ में वन के पशुओं को लगा कि अब वे प्रजातंत्र की शासन व्यवस्था संभाल सकते हैं .उन्हें लगने लगा की उनका जीवन इतना विकसित हो गया है कि अब उन्हें लोकतंत्र की शासन व्यवस्था को अपना लेना चाहिए . जहाँ पर सभी नियम एवं कानून लागू होने चाहिए . सभी ने मिलकर नीचे किया की वन - प्रदेश में प्रजातंत्र में प्रजातंत्र की स्थापना हो .पशु समाज में आनंद की लहर दौड़ पड़ी .

वन प्रदेश में भेड़ों की संख्या अधिक थी . उन्होंने सोचा कि अब उनका भय दूर हो जाएगा .वे अपने प्रतिनिधित्व द्वारा नियम - कानून बनवाएंगी जिससे की कोई भी जीवधारी किसी अन्य जीव को न मारे .उधर दूसरी तरफ भेड़िये यह सोचकर दुखी हो रहे थे की अब उन पर संकट आने वाला है क्योंकि उनकी संख्या कम थी .भेड़ों को संख्या अधिक होने के कारण पंचायत में उन्ही का बहुमत होगा .यदि बहुमत से भेड़ें यह कानून बनवा देंगी कि कोई पशु किसी को न मारे ,न खाए तो उनका क्या होगा ? वे क्या खायेंगे ,भेड़िये तो भूखें मर जायेंगे . एक बूढ़े सियार को भेड़िये की चिंता का कारण समझ में आ गया .उसने भेड़िये को बहुमत में आने का मार्ग दिखाया .उसने भेड़िये को रूप बदलकर भेड़ों के सामने पेश किया .बूढ़े सियार ने तीन रेंज सियोर्ण की सहायता से भेड़िये के लिए प्रचार किया . उन चारों सियारों से रंग बदल कर ऐसा समां बाधा की सभी भेड़ों को विश्वास हो गया की भेड़िये परमात्मा के रूप हैं,त्यागी हैं ,परोपकारी हैं ,दयावान है. वे भेड़ें की बातों में आकर भेड़ियों की सरकार बनवा देती है .बहुमत पाने के बाद भेड़िये ने भेड़ों के भलाई ने लिए पहला कानून बनवाया . इसमें कहा गया कि हर भेड़िये को सवेरे नाश्ते के लिए भेड़ का एक मुलायम बच्चा दिया जाए , दोपहर के भोजन में एक पूरी भेड़ तथा शाम को स्वास्थ्य के ख्याल से कम खाना चाहिए, इसलिए आधी भेड़ दी जाए |

भेड़ें और भेड़िए कहानी शीर्षक की सार्थकता

किसी भी कहानी का शीर्षक उसका सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है .हम उसके सहारे कथा के विस्तार को जान पाते हैं . प्रस्तुत कहानी एक प्रतीकात्मक कहानी है जिसमें भेड़ों को जनता तथा सियार को भेड़ियों को चालक

नेताओं का प्रतिक बना कर व्यंगात्मक शैली में प्रस्तुत किया गया है . कहानी में भेड़ें आम जनता की तरह हमेशा अपने नेताओं पर विश्वास कर लेती हैं और अंत में ठगी जाती है . दूसरी तरह संत का रूप धरे नेतागण है जो ढोंग और चल करके जनता को हमेशा धोखा देते रहते हैं . रंगे हुए सियार नेताओं के आसपास बने रहने वाले कवि ,पत्रकार ,नेता और धर्मगुरु आदि के रूप में रहते हैं . जो भ्रष्ट नेताओं का सहयोग देते हैं तथा उनका प्रचार करते हैं . अतः इस कहानी के माध्यम से लेखक ने आज की राजनीति पर करारा व्यंग किया है . शीर्षक की दृष्टि से देखा जाए तो यह अत्यंत उचित व साथक है .

बूढ़े सियार का चरित्र चित्रण

बूढ़ा सियार उन चापलूस ,खुशामद तथा मौकापरस्त लोग का प्रतिनिधित्व करता है जो की ताकतवर नेताओं के आगे पीछे घूमकर तथा उनकी हाँ में हाँ मिलकर अपना काम निकलते रहते हैं . बूढ़ा सियार चापलूस है .वह जानता है की भेड़िये की चापलूसी में वह अपने जीवन को सुखमय बना सकता है . भेड़िये की चापलूसी करते हुए वह भेड़िये की डांट -डपट भी सजहता से सुन लेता है . पल पल में ही उसे भगवान् या परमात्मा बना लेता देता है .भेड़िये की तारीफ़ करते हुए वह हर सीमा को पार कर जात है . बूढ़ा सियार बहुत ही चालक ,बुद्धिमान ,चापलूस ,धूर्त ,स्वार्थी तथा कपटी है . वह जानता है कि भेड़ियों को चुनाव जिताने में उसकी हर संभव मदद करता है .

अवतरणों पर आधारित प्रश्नोत्तर

१) यह एक भेड़िये की कथा नहीं है, यह सब भेड़ियों की कथा है। सब जगह इस प्रकार प्रचार हो गया और भेड़ों

को विश्वास हो गया कि भेड़िये से बड़ा उनका कोई हित-चिन्तक और हित-रक्षक नहीं है।

प्रश्न

(i) "यह सब भेड़ियों की कथा है" - इस कथन का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

(ii) चुनाव के समय भेड़िये का प्रचार किसने और किस प्रकार किया ?

(iii) भेड़ों को क्या विश्वास हो गया था और क्यों ? समझाकर लिखिए।

(iv) सियारों ने भेड़िये का प्रचार क्यों किया था?

२) पशु-समाज में इस 'क्रांतिकारी' परिवर्तन से हर्ष की लहर दौड़ गई कि सुख-समृद्धि और सुरक्षा का स्वर्ण-युग अब आया और वह आया।

प्रश्न

(i) पशु-समाज की खुशी का क्या कारण था ?

(ii) 'क्रांतिकारी' से क्या तात्पर्य है ? यहाँ इस शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है ? समझाकर लिखिए।

(iii) चुनाव की घोषणा होते ही भेड़ियों ने क्या सोचा ? चुनाव के बाद भेड़ियों ने पंचायत में पहला कानून क्या बनाया ?

(iv) प्रजातंत्र किसे कहते हैं ? भारतीय प्रजातंत्र में क्या खामियाँ हैं और इसका निवारण कैसे किया जा सकता है ? अपने शब्दों में उत्तर दीजिए।